ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 235-236**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

समन्वित क्षेत्रीय विकास में सेवा केन्द्रों की भूमिका

डॉ0 संजू चतुर्वेदी

भूगोल, महवीर कालोनी, परिखरा, बलिया (उ0प्र0) भारत

Received-21.06.2022, Revised-25.06.2022, Accepted-28.06.2022 **E-mail: tanishkhar@gmail.com**

सारांशः – ***ग्रामीण क्षेत्रों में संतलित विकास एवं संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग हेतु सामाजिक–आर्थिक क्रियाओं के विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया में अधिक लाभ के स्थलों का चयन किया जाता है। ये स्थल ही सेवा केन्द्र के रूप में ग्राम एवं नगर के सामाजिक–आर्थिक दूरी को कम कर समन्वित क्षेत्रीय विकास में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। ये सेवा केन्द्र योजना के नीति निर्धारण में विभिन्न तरीकों से सम्मिलित रहते हैं तथा किसी विशेष नीति का प्रभाव जो एक नियम पर आधारित होता है, उसमें ये सेवा केन्द्र देश के प्रत्येक सामाजिक–आर्थिक संगठन में ठीक बैठते हैं।***

सेवा केन्द्रों का आज प्राथमिक महत्व है, क्योंकि अपनी स्थिति से ये क्षेत्रीय जनसंख्या की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में वितरण के ये केन्द्र ही ग्रामीण समुदायों के सामाजिक–आर्थिक क्रियाओं के उत्प्रेरक होते हैं। सामान्यतः ये सेवा केन्द्र अपने चतुर्दिक फैले क्षेत्रों को विभिन्न सामाजिक–आर्थिक सेवाएं प्रदान करने के अतिरिक्त सेवा क्षेत्र के उत्पादन अतिरेकों को विपणन की सुविधा प्रदान करते हुए उच्च श्रेणी के सेवा केन्द्रों से प्राप्त नवभिज्ञानों को अपने सेवा क्षेत्र में प्रसारित कर कृषि, उद्योग एवं वाणिज्य के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाते हैं। अपने सेवा क्षेत्र के विकास के लिए श्रेयस्कर वातावरण के साथ ही ये सेवा केन्द्र रोजगार के नये अवसर प्रदान कर नगरोन्मुख प्रवास को रोकने में भी सक्षम होते हैं।

कुंजीभूत शब्द– संतलित विकास, अनुकूलतम, विकेन्द्रीकरण, समन्वित क्षेत्रीय विकास, नीति निर्धारण, चतुर्दिक।

इस प्रकार स्पष्ट है कि सेवा केन्द्र रूपी ये अधिवास शहर एवं देहात तथा शहर एवं नगर के मिलन बिन्दु हैं जो अपने प्रशासनिक सेवा द्वोत्र के निवासियों को आवश्यक सेवायें प्रत्यक्षतः या परोक्षतः प्रदान करते हैं, मनुष्य के सामाजिक आर्थिक एवं भौगोलिक सम्बन्धों से सीधा सम्पर्क रखते हैं। ये सेवा केन्द्र निम्नलिखित सेवा कार्यों अवस्थापनात्मक तत्वों को क्षेत्र में प्रसारित करते हुए समन्वित क्षेत्रीय विकास में अपना योगदान करते हैं।

1. प्रशासनिक सेवाऐं– प्रशासनिक सेवाऐं ग्राम सभा, न्याय पंचायत, विकास खण्ड, मुख्ययालय तहसील मुख्यालय, जिला मुख्यालय, पुलिस स्टेशन एवं पुलिस चौकी के रूप में प्राप्त होती है। सेवा केन्द्रों के आकार एवं श्रेणी के अनुसार इन प्रशासनिक सेवाओं में से कोई न कोई प्रशासनिक सेवा प्रत्येक सेवा केन्द्र में विद्यमान रहती हैं, जो अपने कार्यों द्वारा सेवा केन्द्रों को न्याय एवं सुरक्षा प्रदान करती है।

2. शैक्षिक सेवा– शैक्षिक सेवा के अन्तर्गत प्राइमरी स्कूल, जूनियर हाईस्कूल, हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट कालेज, डिग्री कालेज, स्नातकोत्तर कालेज एवं तकनीकी शिक्षा आदि प्राप्त होती है, जो अपनी सेवायें प्रदान कर लोगों के बौद्धिक स्तर में सुधार करती हैं।

शिक्षा वृहद रूप से ग्रामीण विकास को प्रभावित करती हैं। यह आत्म विश्वास पैदा करने के लिए योजना में भाग लेकर उसको मूर्त रूप देने एवं उसकी क्षमता को बढ़ाने, स्थानीय एवं राष्ट्रीय संगठनों के निर्माण, राजनीतिक, सामाजिक चेतना, स्थानीय व राजनीतिक ढ़ॉचें के परिवर्तन में स्थायित्व, सामाजिक अन्याय को कम करने तथा आर्थिक समानता के लिए आवश्यक है।

3. परिवहन सेवा– सेवा केन्द्र सड़क परिवहन एवं रेल परिवहन से मुख्य रूप से जुड़े होते हैं। आजकल इस गतिशील समाज में कोई भी कार्य बिना परिवहन सुविधा के सम्भव नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों के जो भाग इन केन्द्रों से सड़कों अथवा रेल मार्ग द्वारा जुड़े होते हैं, वहॉ के लोग आसानी से अपने मूलभूत आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त कर लेते हैं। कृषक सुविधापूर्वक अपने उत्पादन को बाजार में पहुॅचाकर उचित लाभ प्राप्त करते हैं और समय की बचत कर अपना अतिरिक्त कार्य करते हैं।

4. संचार सेवा– परिवहन की तरह ही संचार सेवा की अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आजकल समय इतना मूल्यवान है कि किसी भी व्यक्ति को कहीं जाकर सूचना देना सम्भव नहीं है। इस स्थिति में डाकघर व इन डाकघरों में प्राप्त तार एवं टेलीफोन सुविधा ही संचार का माध्यम हे, जो इन सेवा केन्द्रों पर प्राप्त होते हैं, जहॉ से जनता अपने संचार कार्य का सम्पादन करती है।

5. स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवा– शिक्षा की तरह स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवा की मूलभूत आवश्यताओं में अपना स्वतंत्र स्थान रखता है क्योंकि स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवा के अभाव में शारीरिक अक्षमता पैदा हो जाने पर उसका स्पष्ट प्रभाव श्रम

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

पर पड़ता है, जिससे आर्थिक विकास प्रभावित होता है। चूंकि प्रत्येक गॉवों में चिकित्सा सुविधा प्राप्त नहीं होती है। अतः ये गॉव अपने समीपवर्ती सेवा केन्द्रों से ही स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधा प्राप्त करते हैं।

6. कृषि सेवा– किसी भी क्षेत्र में सक्षम विकास केन्द्र का सीधा प्रभाव कृषि एवं लाभ पर पड़ता है क्योंकि वहॉ उनके उत्पादन को बेचने एवं खरीदने की पर्याप्त सुविधा रहती है। इसके अतिरिक्त ये केन्द्र कृषि सम्बन्धी अन्य सामग्री, यथा– उन्नत बीज, खाद, कृषि रक्षा सम्बन्धी कार्य एवं आधुनिक कृषि तकनीकी प्रदान करते हैं, जिसका उपयोग कर कृषक अपने कृषि का विकास करते हैं।

7. वित्त सेवा–जिन सेवा केन्द्रों पर वित्त विनिमय की सुविधा है, वहॉ के समीपवर्ती गॉव विकास के पथ पर अग्रसर है इन लोगों के सेवा केन्द्रों पर स्थित बैंक से लघु उद्योगों, कृषि एवं पशुपालन आदि कार्यों हेतु ऋण प्राप्त हो जाता है। जिनका उपयोग कर ये अपना आर्थिक विकास करते हैं। इनके अतिरिक्त ये अपने अर्जित आय को इन बैंकों में आसानी से जमा कर उसका ब्याज पाते रहते हैं तथा चोरी आदि के भय से भी मुक्त रहते हैं।

8. विपणन सेवा– समनित क्षेत्रीय विकास में ग्रामीण बाजार अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कारण कि ये ग्रामीण बाजार ग्रामीण विकास में मात्र पूरक का ही कार्य नहीं करते हैं, बल्कि कृषि व्यापार पद्धति के पूर्व गठन में पूर्णतः स्वतंत्र एवं उपयोगी भूमिका अदा करते हैं। समन्वित क्षेत्रीय विकास की समग्र योजना के भीतर बाजार विकास कार्यक्रमों का खास जगह है। ग्रामीण खरीद फरोख्त तंत्र के गठन एवं संचालन में सुधार एक ऐसा महत्वपूर्ण सशक्त एवं समन्वयकारी तत्व है, जिससे सामान्य विकास के लक्ष्य पूरे हो सकते हैं और लघु कृषकों तथा दूसरे ग्रामीण समुदायों को समान से लाभ मिल सकते हैं। इसके अतिरिक्त इन केन्द्रों से जनता को दैनिक उपभोग की प्रायः प्रत्येक वस्तुएँ आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।

9. धार्मिक एवं सांस्कृतिक सेवा– सेवा केन्द्रों पर धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्य जैसे– मेला, रामलीला, नाटक, पुस्तकालय, वाचनालय एवं सिनेमा आदि की भी सुविधा रहती है, जहॉ ग्रामीण लोग अपना मनोरंजन करते हैं, जिससे उनका मन प्रसन्नचित रहता है और उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि होती है।

10. अन्य सेवाएँ– उपर्युक्त सेवाओं के अतिरिक्त ये सेवा केन्द्र अन्य सुवधिाएं जैसे– अवशीतन गृह, पेट्रोल व डीजल पम्प, अग्निशमन सेवा, समाचार पत्र, विद्युत वितरण सेवा, जल वितरण सेवा आदि उच्च कार्यों को भी सम्पन्न करते हैं, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव विकास पर पड़ता है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि सेवा केन्द्रों का क्षेत्रीय विकास में सीधा संबंध है। अतः क्षेत्रीय विषमताओं को कम करने, ग्रामीण निर्धनता को दूर करने एवं निचले स्तर पर नियोजन के लिए समुचित स्थानों पर सेवा केन्द्र के रूप में विकास केन्द्रों की स्थापना उपादेय है। इसलिए स्थिति के महत्व के अनुसार ग्रामों को विकसित कर गॉव रूप कस्बे बनाये जा सकते हैं, जो विभिन्न ग्रामीण समूहों के कृषि एवं औद्योगिक विकास में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। इन केन्द्रों पर विभिन्न सामाजिक–आर्थिक संस्थानों की स्थापना, उपभोग वस्तुओं के बाजार, कृषि उद्योग स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षालय, मनोरंजन एवं अन्य सुविधाओं का विकास करता है। जिसका प्रयोग ये सेवा केन्द्र क्षेत्रीय एवं ग्रामीण विकास के लिए करते हैं। अतः स्पष्ट है कि सेवा केन्द्र समन्वित क्षेत्रीय विकास हेतु मेरूदण्ड का कार्य करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अहमद, जी० (1947), डिस्ट्रब्यूशन पैटर्न ऑफ अरबन सेन्टर्स इन पाकिस्तान, पाक ज्योग्राफिकल रिव्यू, वा० 22, पृ० 1–8.
2. क्रिस्टालर, डब्ल्यू (1933), सेन्ट्रल प्लेस इन साउदर्न जर्मनी, ट्रान्सलेटेड बाई सी०डब्ल्यू० वेस्कीन, प्रेन्टीस हाल, न्यू जर्सी, पृ० 19.
3. क्लार्क, पी०जे० एण्ड एफ०सी० ईवान्स (1954), डिस्टेन्स टू नियरेस्ट नाइवर एज ए मिजर ऑफ स्पेशियल रिलेशनशिप इन पापुलेशन, ईकोलॉजी, वा० 35, पेज, 445–53.
4. गुडलुण्ड एस० (1956), दि फंक्शन एण्ड ग्रोथ ऑफ बस ट्रेफिक विद इन दी इस्फेयर ऑफ इअरबन इन्फ्लूएन्स, लुण्ड स्टडीज इन ज्योग्राफी, सीरीज, बी०, सं० 18, पृ० 13–14.
5. जेफरसन, एम० (1931), डिस्ट्रब्यूशन ऑफ वर्ल्ड फोल्क, ज्योग्राफिकल रिव्यू, वा०–21, पृ० 453.
6. डेविस, डब्ल्यू० के०डी० (1967), सेन्ट्रलिटी एण्ड सेंट्रल प्लेस हाईरार्की, अरबन स्टडीज, सं०–4.

*****